वार्षिक प्रतिवेदन

2014-2015

कृषि विश्वविद्यालय

जोधपुर - 342304 (राज.)

वार्षिक प्रतिवेदन
2014-2015

कृषि विश्वविद्यालय
जोधपुर-342304 (राज.)

2014–2015

:: सम्पादक एवं समन्वयक ::

डॉ. गजेन्द्र सिंह राठौड़

निदेशक, प्राथमिकता, निगरानी एवं मूल्यांकन

E-mail : drgajendra_sahanali@yahoo.co.in

:: प्रकाशक ::

निदेशक, प्राथमिकता, निगरानी एवं मूल्यांकन

कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर

E-mail : drgajendra_sahanali@yahoo.co.in

2014–2015

अनुक्रमणिका

कृषि विश्वविद्यालय की विभिन्न ईकाइयों का वार्षिक प्रतिवेदन (2014–15)

	पेज नं.
1. कृषि विश्वविद्यालय जोधपुर का प्रशासनिक प्रतिवेदन	1–12
2. कृषि अनुसंधान	13–22
3. कृषि प्रसार शिक्षा	23–25
4. कृषि शिक्षा	26–34
अ) कृषि महाविद्यालय, मण्डोर, जोधपुर	
ब) कृषि महाविद्यालय, सुमेरपुर (पाली)	
स) कृषि डिप्लोमा संस्थान, लाड़नू (नागौर)	
5. सार संक्षेप	35–37

1. कृषि विश्वविद्यालय जोधपुर का प्रशासनिक प्रतिवेदन

1.विभाग का संगठनात्मक ढांचा:

परिचयात्मक

कृषि विश्वविद्यालय जोधपुर पूर्व में स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर का ही एक खण्ड था। वर्ष 2013 में अधिनियम 21 के तहत 14 सितम्बर 2013 को राज्य के पश्चिमी क्षेत्र के 6 जिलों के शुष्क एवं उष्ण अंश को विकसित करने एवं कृषि शिक्षा प्रसार की आवश्यकतानुसार नया कृषि विश्वविद्यालय जोधपुर में स्थापित किया गया। इस नवीन कृषि विश्वविद्यालय के अन्तर्गत पश्चिमी राजस्थान के 6 जिलों के कृषि जलवायु खण्ड आते हैं जो इस प्रकार है। शुष्क पश्चिमी मैदान खण्ड Ia (जोधपुर, बाड़मेर जिले), लूणी नदी के संग्रहण क्षेत्र के परिवर्तनशील मैदान खण्ड-II b (जालौर, पाली एवं सिरोही जिले) तथा भीतरी जल निकास के परिवर्तनशील मैदान खण्ड II a इस विश्वविद्यालय के अन्तर्गत राजस्थान के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 342 लाख हैक्ट. में से 97 लाख हैं (28 प्रतिशत) आता है। खरीफ एवं रबी फसलों में राजस्थान के कुल कृषित क्षेत्रफल का क्रमशः 34.94 प्रतिशत एवं 14.64 प्रतिशत इसके अन्तर्गत आता है।

कृषि महाविद्यालय सुमेरपुर, पाली के (2012) एवं कृषि महाविद्यालय मण्डोर-जोधपुर (2012) इस विश्वविद्यालय को सोंप दिये गये है। तदुपरांत वर्ष (2013) में कृषि डिप्लोमा संस्थान लाडनूं (नागौर) नव स्थापित किया गया। इस विश्वविद्यालय के अन्तर्गत कृषि जलवायु खण्ड के अनुसार दो कृषि अनुसंधान केन्द्र क्रमशः मण्डोर, (जोधपुर) एवं केशवाना, (जालौर) में संचालित हो रहे है। इसी तरह तीन कृषि अनुसंधान उप केन्द्र क्रमशः नागौर, सुमेरपुर (पाली) एवं समदड़ी (बाड़मेर) में संचालित हो रहे है। जहां पर बाजरा, मूंग, मोठ, ग्वार, तिल, अरण्ड, सरसों, तारामीरा, राजगीरा, गैहूं, मैथी, इसबगोल एवं जीरा पर जलवायु की दृष्टि से अनुसंधान कार्य चल रहा है। कृषि विश्वविद्यालय परिक्षेत्र में 6 कृषि विज्ञान केन्द्र क्रमशः फलौदी, अठयासन (नागौर), मौलासर (नागौर), केशवाना (जालोर), सिरोही तथा गुड़ामालानी (बाड़मेर) कृषि विस्तार, शिक्षा व प्रसार कार्य कर रहे हैं।

कृषि उद्यानिकी के तहत सब्जी उत्पादन हेतु हाइड्रोपोनिक पद्धति विकसित एवं स्थापित की गई है। इस विश्वविद्यालय के मण्डोर केन्द्र पर चार भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् द्वारा संचालित तिल, अरण्ड, बाजरा एवं अण्डर यूटीलाइज्ड फसलों पर अखिल भारतीय समन्वित परियोजनायें चल रही हैं तथा भारत सरकार द्वारा संचालित जीरा विकास की परियोजना चल रही हैं। इसी तरह राज्य सरकार द्वारा अनुदानित गैर योजना, नार्प, रिजनल परियोजनाऐं बाजरा एवं मोठ पर संचालित हो रही है। इसके अतिरिक्त इन योजनाओं के तहत कृषकों की समस्याओं के अनुरूप उनके निवारण हेतु अनुसंधान कार्य संचालित होता है। चार अंशकालीन परियोजनायें जो राष्ट्रीय कृषि विकास योजना एवं RADP के तहत संचालित हो रही है।

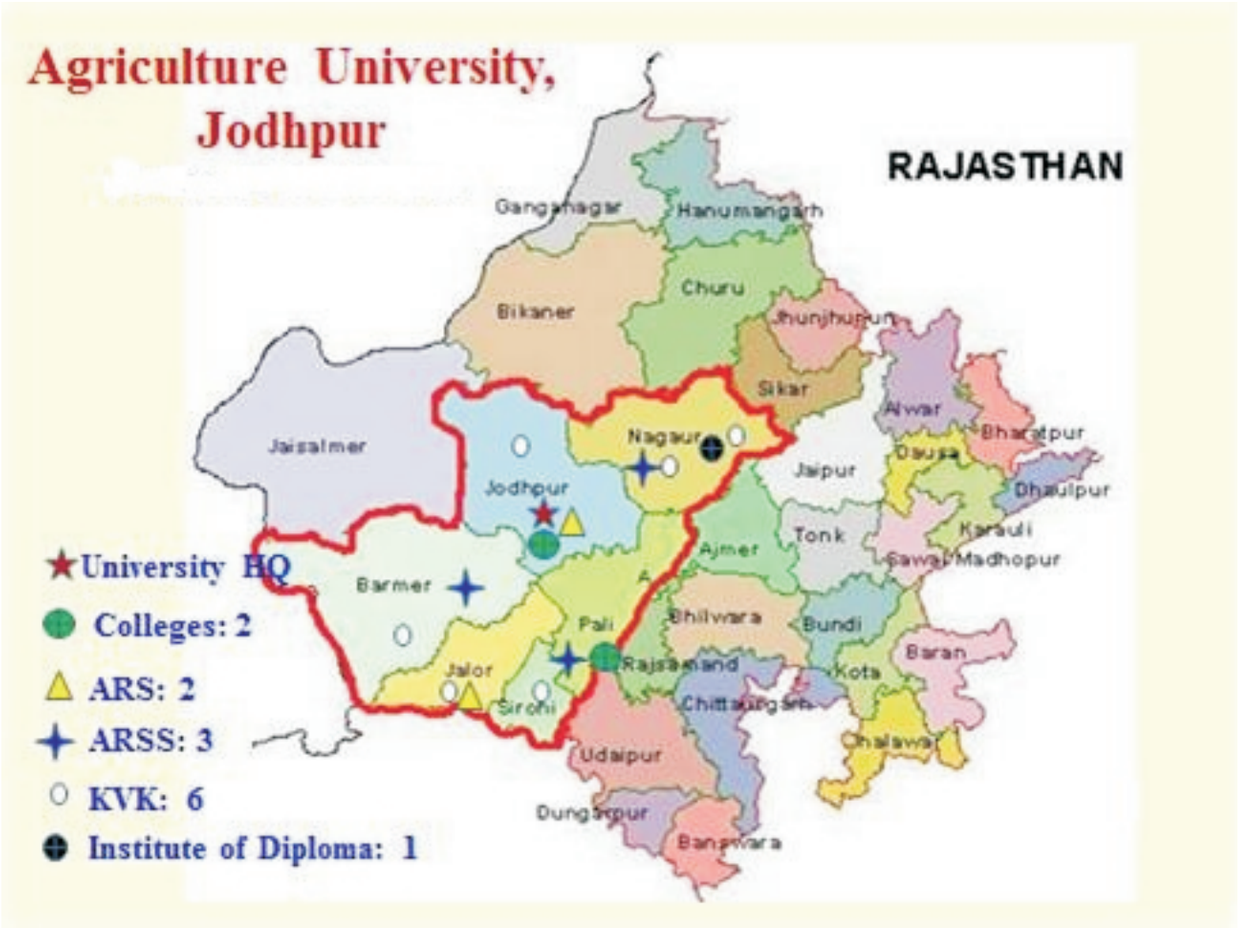

महाविद्यालय/संस्थाऐं/अनुसंधान केन्द्र/कृषि विज्ञान केन्द्रः

- कृषि महाविद्यालय-मण्डोर एवं सुमेरपुर (2)
- कृषि डिप्लोमा संस्थान-लांडनू, नागौर
- कृषि अनुसंधान केन्द्र- मण्डोर एवं जालोर (2)
- कृषि अनुसंधान उप-केन्द्र-नागौर,सुमेरपुर एवं समदड़ी (3)
- कृषि विज्ञान केन्द्र-फलौदी,नागौर,मौलासर,गुड़ामालानी,सिरोही एवं जालोर (6)

विश्वविद्यालय के उद्देश्य:

(क) अध्ययन की भिन्न-भिन्न शाखाओं में, विशिष्टतः कृषि, उद्यान-कृषि, मत्स्य पालन, वानिकी, में शिक्षा प्रदान करने के लिए उपबंध करवाना ।

(ख) विद्या का अभिवर्धन और अनुसंधान का संचालन, विशिष्टतः कृषि और अन्य सहबद्ध विज्ञानों में, करवाना ।

(ग) ऐसे विज्ञानों और प्रौद्योगिकियों की विस्तार शिक्षा को हाथ में लेना, विशेषतः राज्य की ग्रामीण जनता के लिए, और

(घ) ऐसे अन्य उद्देश्य जिन्हें विश्वविद्यालय समय समय पर अवधारित करें ।

2.स्वीकृत कार्य एवं रिक्त पदों का विवरण:

स्टेट प्लॉन,नॉन प्लॉन,भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् द्वारा संचालित परियोजनाऐं तथा कृषि विज्ञान केन्द्र, जो विश्वविद्यालय के अंतर्गत चल रहे हैं, के पदों का विवरण इस प्रकार हैं:-

अ. प्रशासनिक पदों का विवरण

क्र.सं.	नाम पद कृषि विश्वविद्यालय जोधपुर	राज्य योजना	योग		
			स्वीकृत पद	भरे हुए पद	खाली पद
1.	कुलपति	1	1	1	1 (अतिरिक्त कार्यभार)
2.	कुलसचिव	1	1	1	.
3.	वित नियंत्रक	1	1	1	1 (अतिरिक्त कार्यभार)
4.	अधिष्ठाता / निदेशक	5	5	.	5
5.	भू–सम्पति अधिकारी	1	1	.	1
	योग	9	9	3	6

ब. शैक्षणिक पदों का विवरण

क्र. सं.	नाम पद	आईसीएआर अनु0 परियोजना, पी.सी ईकाई तथा कृषि विज्ञान केन्द्र	राज्य योजना	गैर योजना	योग		
					स्वीकृत पद	भरे हुए पद	खाली पद
1.	आचार्य	1	2	3	6	1	5
2.	सह–आचार्य	7	4	18	29	7	22
3.	सहायक आचार्य	27	20	32	79	36	43
4.	कार्य. समन्वयक	6	.	.	6	1	5
5.	पुस्तकालय अध्यक्ष	.	1	.	1	.	1
6.	सहा0पुस्तकालय अध्यक्ष	.	2	.	2	.	2
7.	प्रिंसीपल	.	1	.	1	.	1
8.	विषय विशेषज्ञ	18	.	.	18	.	18
	योग	**59**	**30**	**53**	**142**	**45**	**97**

स. तकनीक, अशैक्षणिक पदों का परियोजनात्मक विवरण

क्र.सं	नाम पद	स्वीकृत पद	भरे हुए पद	खाली पद
1.	आईसीएआर अनु0 परियोजना, पी.सी. ईकाई तथा कृषि विज्ञान केन्द्र	87	47	39
2.	राज्य योजना	84	6	78
3.	गैर योजना	48	36	12
	योग	219	89	130
	कुल योग	**370**	**135**	**235**

विश्वविद्यालय की स्थापना के साथ ही वित्त वर्ष 2013-14 में 62 पद स्वीकृत किये गये । जिसके अंतर्गत कुलपति, कुलसचिव तथा अन्य सहायक कर्मचारियों के पद आते हैं तथा शेष पद पैतृक विश्वविद्यालय स्वामी केशवानंद कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर से स्थानांतरित हुए विभिन्न वर्गो के 370 पदों में से 135 पद ही भरे हुए हैं । तदपरान्त भी सेवानिवृत एवं उपलब्ध आचार्य के निर्धारित मानदेय पर आमंत्रित कर अध्यापन का कार्य सम्पादित किया जा रहा है।

3.विभागीय प्रमुख कार्य तथा प्रत्येक प्रमुख कार्य के विरूद्ध आलौच्य वर्ष में प्रगति

1.विश्वविद्यालय ने अपनी एक वर्ष की गतिविधियों एवं महत्त्वपूर्ण उपलब्धियों को समावेशित करते हुए द्वि-वार्षिक 'न्यूज लेटर' (एग्री न्यूज) के दो अंक (प्रथम अंक में माह अक्टूबर 2013 से मार्च 2014 एवं द्वितीय अंक में माह अप्रेल से सितम्बर 2014 की उपलब्धियां) प्रकाशित किये हैं । प्रथम अंक को दिनांक 20 मई 2014 को डा0 ए.एस. फडौदा, पूर्व कुलपति महाराणा प्रताप कृषि विश्वविद्यालय, उदयपुर एवं निर्वतमान कुलपति कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर डा0 एल.एन. हर्ष ने एवं द्वितीय अंक को निर्वतमान कुलपति डा0 हेमन्त कुमार गेरा, आई.ए.एस. ने माह जनवरी 2015 में विमोचित किया ।

एग्री न्युज लेटर का विमोचन

2.कृषि विश्वविद्यालय 'एट ए ग्लांस' का विमोचन महामहीम राज्यपाल राजस्थान द्वारा दिनांक 18 नवम्बर 2013 को किया ।

3. विश्वविद्यालय की स्थापना के साथ ही विभिन्न प्रशासनिक पदों का कार्यभार विश्वविद्यालय के अधिकारियों को सौंपा गया, जिनका विवरण निम्नानुसार हैं-

क्र.सं.	पदनाम	नाम अधिकारी
1.	कुलपति	डा0 एल.एन. हर्ष श्री हेमन्त कुमार गेरा (आई.ए.एस.) प्रो0 बी.आर.छीपा
2.	कुलसचिव	श्री सोहनलाल शर्मा (आई.ए.एस.) डा0 के.के. बोड़ा श्री असलम मेहर (आर.ए.एस.)
3.	निदेशक अनुसंधान	डा0 जी.एन. परिहार डा0 बी.आर. चौधरी
4.	निदेशक, प्रसार शिक्षा	डा0 ईश्वरसिंह
5.	निदेशक, प्राथमिकता, निगरानी एवं मूल्यांकन	डा0 गजेन्द्रसिंह राठौड़
6.	निदेशक, मानव संसाधन विकास	डा0 शंभुसिंह सोलंकी
7.	निदेशक, शिक्षा	डा0 शंभुसिंह सोलंकी
8.	निदेशक, छात्र कल्याण	डा0 आर.एस. चांवडा डा0 मालमसिंह चांदावत
9.	अधिष्ठाता एवं संकाय अध्यक्ष, कृषि महाविद्यालय, मण्डोर	डा0 के. के. बोडा डा0 महेश चंद्र बोहरा
10.	अधिष्ठाता, कृषि महाविद्यालय, सुमेरपुर, पाली	डा0 वी.एस. जैतावत डा0 बी.एस. भीमावत
11.	परीक्षा नियंत्रक	डा0 बी.एस. राठौड़ डा0 एम.सी. बोहरा
12.	प्रिंसीपल,कृषि डिप्लोमा संस्थान,लांडनू	डा0 कानसिंह डा0 सेवा राम कुमावत

4. कृषि विश्वविद्यालय में अकादमिक परिषद् गठन एवं विश्वविद्यालय के विभागाध्यशों की नियुक्ति-

अकादमिक परिषद्

01.	कुलपति	पदेन अध्यक्ष	डा0 बी.आर. छीपा
02.	कुलसचिव	सदस्य	श्री असलम मेहर, आर.ए.एस.
03.	निदेशक, अनुसंधान	पदेन सदस्य	डा0 बी.आर. चौधरी
04.	निदेशक, प्रसार शिक्षा	पदेन सदस्य	डा0 ईश्वरसिंह
05.	निदेशक, प्राथमिकता, निगरानी एवं मूल्यांकन	पदेन सदस्य	डा0 गजेन्द्र सिंह राठौड़
06.	निदेशक, छात्र कल्याण	पदेन सदस्य	डा0 एम. एस. चांदावत
07.	निदेशक, मानव संसाधन विकास	पदेन सदस्य	डा0 एस. एस. सोलंकी
08.	समस्त संकायों के अध्यक्ष	पदेन सदस्य	डा0 एम. सी. बोहरा (कृषि संकाय अध्यक्ष)
09.	समस्त घटक महाविद्यालयों के संकाय अध्यक्ष	पदेन सदस्य	डा0 एम. सी. बोहरा, अधिष्ठाता, कृषि महाविद्यालय, मण्डोर, जोधपुर डा0 बी. एस. भीमावत, अधिष्ठाता, कृषि महाविद्यालय, सुमेरपुर, पाली
09.	परीक्षा नियंत्रक	पदेन सदस्य	डा0 एम. सी. बोहरा
10.	विश्वविद्यालय के सभी विभागों के प्रत्येक संकाय का प्रधान (केवल अध्यापन निवेश से जो सह–आचार्य से अभिन्न रैंक का हो)	सदस्य	डा0 के. एल. पूनिया, प्रोफेसर, (शस्य विज्ञान) डा0 एम. सी. बोहरा, प्रोफेसर, मृदा विज्ञान डा0 एस.एस. सोलंकी, प्रोफेसर, पदम प्रजनन एवं अनुवांशिकी डा0 बी.एस. राठौड़, (पादप रोग विज्ञान) डा0 बी.एस. भीमावत, प्रोफेसर, (प्रसार शिक्षा) डा0 एन. के. बाजपेयी, प्रोफेसर, (कीट विज्ञान) रिक्त, (पादप परिस्थिति विज्ञान) डा0 जी. आर. खेरवा, प्रोफेसर, (सांख्यिकी)
11.	कुलपति द्वारा चक्रानुक्रम आधार पर नामनिर्देशित किये जाने वाले, प्रत्येक संकाय से आचार्य रैंक का एक अध्यापक	सदस्य	डा0 बी. एस. भीमावत
12.	विश्वविद्यालय से बाहर का, कुलपति द्वारा नामनिद्रेशित किया जाना वाला एक कृषि शिक्षाविद्	सदस्य	डा0 एम. पी. साहू
13.	निदेशक, शिक्षा	सचिव	डा0 एस. एस. सोलंकी

5.विश्वविद्यालय की प्रबंध बोर्ड में राज्य सरकार द्वारा विभिन्न श्रेणी के सदस्यों का नामित किया गया । इसी तरह कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति द्वारा 3 प्रबंध कार्यकारिणी सदस्य (अधिष्ठाता वर्ग, निदेशक वर्ग एवं प्रोफेसर) नामित किये गये । इस तरह विश्वविद्यालय की प्रबंध कार्यकारिणी की स्थिति इस प्रकार से हैं:-

प्रबंध बोर्ड, कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर

i	कुलपति	डा0 बी. आर. छीपा	पदेन अध्यक्ष
ii	कुलसचिव	श्री असलम मेहर, आरएएस	सचिव
iii	प्रभारी शासन सचिव, कृषि विभाग या उसका उप सचिव से अनिम्न रैंक का नामनिर्देशिती		पदेन सदस्य
iv	प्रभारी शासन सचिव, वित विभाग या उसका उप सचिव से अनिम्न रैंक का नामनिर्देशिती		पदेन सदस्य
v	प्रभारी शासन सचिव, उच्च शिक्षा विभाग या उसका उप सचिव से अनिम्न रैंक का नामनिर्देशिती		पदेन सदस्य
vi	प्रभारी शासन सचिव, पशुपालन विभाग या उसका उप सचिव से अनिम्न रैंक का नामनिर्देशिती		पदेन सदस्य
vii	राजस्थान विधानसभा के अध्यक्ष द्वारा नाम निर्देशित किया जाने वाला राजस्थान विधानसभा का एक सदस्य	रिक्त	सदस्य
Viii	कृषि के क्षेत्र से सरकार द्वारा नामनिद्रेशित किये जाने वाले दो प्रख्यात शिक्षाविद् / वैज्ञानिक	डा0 ओ.पी.शर्मा डा0 बी. के. शर्मा	सदस्य
ix	विश्वविद्यालय की अधिकारिता में से सरकार द्वारा नामनिर्देशित किये जाने वाला एक प्रगतिशील किसान	श्री रतनलाल डागा	सदस्य
x	सरकार द्वारा नाम निर्देशित किये जाने वाला एक विशिष्ठता प्राप्त कृषि उद्योगपति	श्री ओमप्रकाश मित्तल	सदस्य
xi	सरकार द्वारा नाम निर्देशित किये जाने वाली एक उत्कृष्ट महिला समाज सेविका, जिसकी पृष्ठ भूमि ग्रामीण उन्नति से संबंधित हो	डा0 राधिका लढ्ढा	सदस्य
xii	भारतीय कृषि अनुसंधान केन्द्र का एक प्रतिनिधि	डा0 बलराजसिंह	सदस्य
xiii	कुलपति द्वारा नाम निर्देशित किये जाने वाला एक निदेशक	डा0 बी. आर. चौधरी	सदस्य
xiv	कुलपति द्वारा नाम निर्देशित किये जाने वाला एक संकाय अध्यक्ष	डा0 बी. एस. भीमावत	सदस्य
xv	कुलपति द्वारा नाम निर्देशित किये जाने वाला एक आचार्य	डा0 जी. एस. राठौड़	सदस्य

6.कृषि महाविद्यालय सुमेरपुर (पाली) एवं कृषि महाविद्यालय मण्डोर (जोधपुर) के नवस्थापन एवं भवनों का शिलान्यास के साथ ही भवन निर्माण कार्य शुरू किया गया जो प्रगति पर है। कृषि महाविद्यालय, मण्डोर के भवन की आधारशिला महामहिम राज्यपाल श्रीमती माग्ग्रेट अल्वा द्वारा दिनांक 23 फरवरी 2014 को रखी गई।

7. कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर द्वारा 23 फरवरी, 2014 को आत्मा के सहयोग से कृषि अनुसंधान केन्द्र, मंडोर पर राजस्थान की पूर्व राज्यपाल महमहिम श्रीमति माग्रेट अल्वा के मुख्य अतिथ्य में एक विशाल किसान मेलें का आयोजन किया गया, जिसमें करीब 1500 कृषकों ने भाग लिया।

8. सरकार के सुराज संकल्प यात्रा 2013 की घोषणाओं के तहत् बारानी खेती से अधिक आय प्राप्त करने की तकनीक का कृषक प्रशिक्षण, कृषि गोष्ठी एवं कृषि प्रदर्शन विश्वविद्यालय के 6 कृषि विज्ञान केन्द्रों एवं 2 कृषि अनुसंधान केन्द्रों पर प्रत्येक माह आयोजित की जाती हैं । जिसमें अब तक छः हजार से अधिक कृषकों को लाभान्वित किया।

9.कृषि विश्वविद्यालय जोधपुर में दिनांक 20 से 21 मई, 2014 को दो दिवसीय तिल व रामतिल पर अखिल भारतीय वार्षिक कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता डा0 ए.एस. फडौदा, पूर्व कुलपति महाराणा प्रताप कृषि एवं तकनीकी विश्वविद्यालय, उदयपुर द्वारा की गई । इस दो दिवसीय कार्यशाला में राजस्थान में ईसबगोल अनुसंधान एवं उन्नत खेती का विमोचन किया गया ।

दो दिवसीय तिल व रामतिल पर अखिल भारतीय वार्षिक कार्यशाला

10. कृषि छात्रों के कृषि ज्ञान के साथ सर्वांगीण व्यवहारिक ज्ञान की दृष्टि से कृषि के प्रायोगिक ज्ञान हेत्तु उन्नतशील कृषकों के यहां भ्रमण के अतिरिक्त उनके व्यक्तित्त्व एवं व्यक्तिगत विकास हेत्तु विभिन्न विषय विशेषज्ञों के व्याख्यान आयोजित करवाये गये । इस व्याख्यान की श्रंखला में महाराष्ट्र बैंक, जोधपुर की मुख्य प्रबंधक श्रीमती संतोष गढ़वाल, कृषि विश्वविद्यालय के कुलसचिव श्री असलम मेहर, आरएएस, जिला परिषद् के मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री अरूण पुरोहित, आरएएस एवं श्री सी. श्री निवासन, योजना निदेशक, इण्डियन ग्रीन सर्विसेज, बैंगलुरू ने अपने विषय की विशेषज्ञता के साथ व्याख्यान दिये।

11. विश्वविद्यालय के विभिन्न पदों की भर्ती हेत्तु सलेक्शन बोर्ड में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् एवं राज्य सरकार द्वारा विशेषज्ञ नामित्त किये गये ।

12.कृषि विश्वविद्यालय की 500 हैक्टेयर भूमि आवंटन हेत्तु प्रस्ताव सचिव यू.डी.एच. राजस्थान सरकार को भेजा गया, जो कि विचाराधीन हैं । इसी प्रकार 8 हैक्टेयर भूमि कृषि डिप्लोमा संस्थान लांडनू, नागौर तथा 20 हैक्टेयर कृषि महाविद्यालय, सुमेरपुर हेतु आवंटन विचाराधीन हैं ।

13. वर्ष 2014-15 में दोनों महाविद्यालयों मण्डोर एवं सुमेरपुर के बी.एस.सी.(कृषि) स्नातक डिग्री हेतु कमशः 45, 44 छात्रों का प्रवेश एवं अध्यापन एवं परीक्षा कार्यकम का संचालन । वर्तमान में दोनों कृषि महाविद्यालयों में 241 छात्र-छात्रा अध्ययनरत् हैं ।

14.कृषि अनुसंधान निदेशालय द्वारा दो तकनीकी बूलेटीन कमशः राजस्थान में तिल अनुसंधान एवं उन्नत खेती तथा राजस्थान में जीरा उत्पादन की सतत् उत्पादन तकनीकें प्रकाशित की गई जिनका विमोचन महामहिम राज्यपाल श्रीमती माग्ररेट अल्वा द्वारा कृषक मेले में दिनांक 23 फरवरी को किया।

15.कृषि विश्वविद्यालय की प्रथम अकादमिक परिषद् की प्रथम बैठक दिनांक 06.08.2014 को संपन्न हुई । जिसकी अध्यक्षता कृषि विश्वविद्यालय के निवर्तमान कुलपति डा0 एल.एन. हर्ष ने की । इस बैठक में कृषि विश्वविद्यालय में कृषि व्यवसाय में निपूर्णता हासिल करने हेतु भविष्य में कृषि व्यवसाय प्रबंधन संस्थान खोलने हेतु प्रस्ताव पारित किया गया । इसके अतिरिक्त लघु व्यवसायिक कार्यक्रमों के प्रशिक्षण जैसे उद्यान नर्सरी, भूमि स्वास्थ्य सुधार, फलों एवं सब्जियों के परिरक्षण का प्रस्ताव पारित किया गया तथा विश्वविद्यालय में कृषि तकनीकी ज्ञान जैसे उन्नत किस्मों के बीज कीट एवं रोग निदान हेतु एकल खिड़की योजना शुरू की जायेगी । छात्रों के सर्वागीण उत्थान हेतु परामर्श केन्द्रों की स्थापना की जायेगी।

अकादमिक परिषद् की प्रथम बैठक

16. कृषि विश्वविद्यालय की विभिन्न इकाईयों में फाईलिंग सिस्टम को एकरूप करने के लिए विश्वविद्यालय के सभी निदेशकों, अधिष्ठाताओं, कुलसचिव कार्यालय, वित्त नियंत्रक एवं परीक्षा नियंत्रक कार्यालय को पत्रावली की व्यवस्था, टिप्पणी लेखन प्रस्तुतीकरण एवं स्थाई फाईल सं. आवंटित की गई ।

17. कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा राष्ट्रीय एवं अर्न्तराष्ट्रीय स्तर के 25 अनुसंधान पत्र प्रकाशित किये गये एवं कृषि विश्वविद्यालय के विभिन्न वैज्ञानिकों द्वारा 30 राष्ट्रीय एवं अर्न्तराष्ट्रीय स्तर की सेमिनार, वर्कशॉप एवं कॉन्फ्रेंस में भाग लिया ।

4. वित्तिय ढांचा:

विश्वविद्यालय के स्टेट प्लॉन के तहत् वित्तिय वर्ष 2014 में रूपये 1725.27 लाख स्वीकृत किये गये, जिसके तहत् केवल 226.78 लाख रूपये कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर को प्रदत्त किये गये तथा शेष राशि रूपये 1498.49 लाख स्वामी केशवानंद, राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर को आवंटिन किया गया हैं । कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर की वर्ष 2014-15 का वित्तिय स्थिति इस प्रकार से हैं:-

			कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर (रूपये लाख में)										
						उत्तरदायित्व 14-15			नवीन मद, 14-15				
क्र. सं.	योजना		राजस्व				केपीटल (पूंजी)						
		वेतन भत्ते	व्यय दिसम्बर 2014	कार्यालय व्यय	व्यय दिसम्बर 2014	नॉन रेकरिंग (भवन)	व्यय दिसम्बर 2014	योग	वेतन भत्ते	कार्यालय व्यय	नॉन रेकरिंग (उपकरण)	योग	कुल योग
1	कृ0वि0, जोधपुर	258.51	36.99	76.41	15.93	0	0	334.92	0	0	0	0	**334.92**
2	कृ0महा0 वि0, मण्डोर	130.17	30.26	103.6	15.69	226.6	226.60	460.37	0	0	157.5	157.5	**617.87**
3	कृ0महा0 वि0, सुमेरपुर	121.84	34.71	103.6	13.79	226.6	226.60	452.04	0	0	157.5	157.5	**609.54**
4	कृ0डिप्लोमा, सं0 लांडनू	34.75	1.70	15.3	4.53	15.0	0	65.05	0	0	35.0	35.0	**100.05**
कुल शिक्षा		**545.27**	**103.66**	**298.91**	**49.94**	**468.2**	**453.20**	**1312.38**	**0**	**0**	**350.0**	**350**	**1662.38**
1	अनुसंधान	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0.0	0	**0**
2	25 प्रतिशत राज्य अंश	56.88	95.74	6.00	2.55	0	0	62.88	0	0	0.0	0	**62.88**
कुल अनुसंधान		56.88	95.74	6.00	2.55	0	0	62.88	0	0	0.0	0	62.89
कुल योग		**602.15**	**199.40**	**304.91**	**52.49**	**468.2**	**453.20**	**1375.26**	**0**	**0**	**350.0**	**350.0**	**1725.27**

राज्य सरकार के उपशासन सचिव कृषि (ग्रुप-3) सचिवालय जयपुर के पत्र क्रमांकः एफ.2(3) एग्री-3/2013 दिनांक 26.06.2014 द्वारा सूचित किया गया कि स्टेट प्लॉन स्कीम के तहत् रूपये 1498.49 लाख रूपये पैतृक विश्वविद्यालय बीकानेर द्वारा प्रदत्त किये जायेंगे ।

2. कृषि अनुसंधान

संगठनात्मक ढांचा

कृषक समुदाय की अर्थव्यवस्था के उत्थानार्थ कृषि विश्वविद्यालय जोधपुर की स्थापना के साथ ही 14 सितम्बर 2013 को अनुसंधान निदेशालय, जोधपुर की शुरूआत हुई । निदेशालय के अधीन दो कृषि अनुसंधान केन्द्र (जोधपुर व जालोर) और तीन कृषि अनुसंधान उप केन्द्र (नागौर, सुमेरपुर व समदड़ी) स्थापित है ।

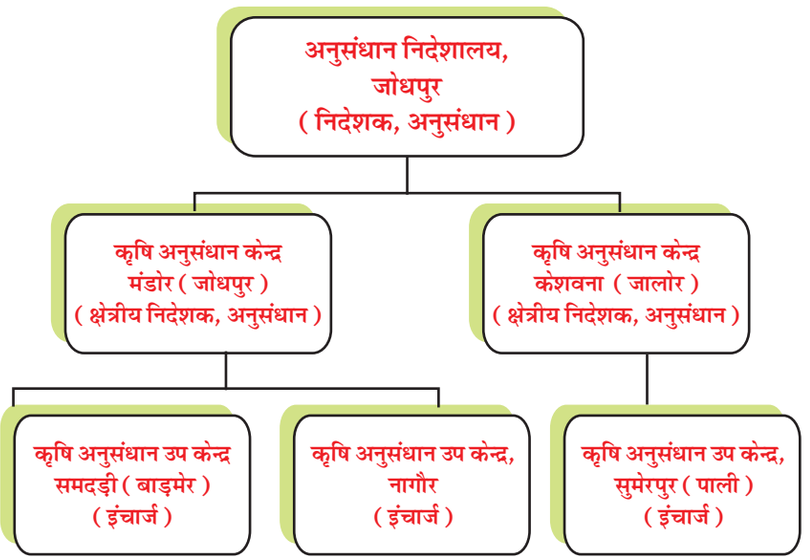

कार्यक्षेत्र व प्रमुख कार्य

राजस्थान के कुल 33 जिलों में से 6 जिले कृषि विश्वविद्यालय जोधपुर के क्षेत्राधिकार में आते हैं। जिसमें कृषि जलवायीय खण्ड 1 ए (शुष्क मैदानी पश्चिमी क्षेत्र) के बाड़मेर व जोधपुर जिले, खण्ड 2 बी (लूणी नदी का अंर्तवर्ती मैदानी क्षेत्र) के पाली, सिरोही व जालोर जिले और खण्ड 2 ए (अंर्तक्षेत्रीय जलोत्सारण के अर्न्तवर्ती मैदान क्षेत्र) का नागौर जिला शामिल हैं । राज्य के कुल भूभाग का लगभग 27 प्रतिशत भाग कृषि विश्वविद्यालय जोधपुर के अंर्तगत आता हैं, जिस पर 20.8 प्रतिशत मानव व 28.4 प्रतिशत पशुआबादी आश्रित हैं ।

अनुसन्धान निदेशालय, विश्वविद्यालय के विभिन्न अनुसन्धान केन्द्रों पर हो रहे अनुसन्धान कार्यो की योजना, निगरानी व मूल्यांकन की भूमिका निभाता है। निदेशालय के प्रत्येक केन्द्र एवं उप केन्द्र के लिए उस क्षेत्र की कृषि परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए नेतृत्व उत्तरदायित्व एवं सत्यापीकरण उत्तरदायित्व निर्धारित किये गये हैं, जिनका विवरण निम्न प्रकार से हैं-

कृषि जलवायु खंड अनुसार कृषि अनुसंधान केन्द्र व उनके अनुसंधान उत्तरदायित्व

कृषि जलवायु खंड	कृषि अनुसंधान केन्द्र	अनुसंधान उत्तरदायित्व	
		नेतृत्व उत्तरदायित्व	सत्यापीकरण उत्तरदायित्व
खंड 1 ए (शुष्क मैदानी पश्चिमी क्षेत्र)	कृषि अनुसंधान केन्द्र, मंडोर (जोधपुर)	बाजरा, तिल, मिर्च, मूंग और नवीन व गैर-परंपरागत फसलें (जैसे तुम्बा, केर व अरंडी) स्वस्थानिक जल संरक्षण व खडीन की प्रथाएँ	मोठ, ग्वार, जीरा, इसबगोल व राया
	कृषि अनुसंधान उप केन्द्र समदड़ी (बाड़मेर)		बाजरा व मोठ
खंड 2 ए (अंर्तक्षेत्रीय जलोत्सारण का अंतर्वर्ती मैदान क्षेत्र)	कृषि अनुसंधान उप केन्द्र नागौर		तिल, मूंग, मेथी, चारा फसल (ज्वार), बाजरा मोठ, ग्वार, आदि कृषि वानिकी और वानिकी चारागाह
खंड 2 बी (लूणी नदी का अंतर्वर्तो मैदान क्षेत्र)	कृषि अनुसंधान केन्द्र, केशवना (जालोर)	मृदा सुधार और संरक्षण खराब गुणवत्ता के पानी की उपयोगिता मेहंदी	सौंफ, अरंडी, सरसों, तिल, चारा फसलें, बाजरा, मूंग, ग्वार, कपास, गेहूं, चना जीरा व इसबगोल स्वस्थानी नमी संरक्षण, 'नेड' क्षेत्र के लिए खेती प्रथाएँ, गैर पारंपरिक फल पीलू, व कृषि वानिकी ।
	कृषि अनुसंधान उप केन्द्र, सुमेरपुर (पाली)	अनार, बेर, अमरूद, पपीता, नींबू, आंवला और लसोड़ा	मिर्च, टमाटर, इसबगोल व पीलू

अनुसंधान के प्राथमिक क्षेत्र

निदेशालय द्वारा अनुसंधान के प्राथमिक क्षेत्र इस प्रकार है–

प्रमुख रबी एवं खरीफ फसलों की उपयुक्त किस्मों की पहचान, विकास व उन्नत उत्पादन तकनीक विकसित करना

नर्मदा कमान क्षेत्रों में दवाब सिंचाई प्रणाली का विकास व मान्यकरण

परिशुद्ध खेती के लिए ड्रिप व फव्वारा सिंचाई प्रणाली का स्वचलनीकरण

विशेष रूप से सब्जियों, मसालों और औषधीय फसलों में जैविक खेती

बागवानी फसलों में फसलोत्तर प्रौद्योगिकियाँ

सक्रिय कृषि, जैव विविधता संरक्षण और प्रबंधन केन्द्र

खेतों की लागत करने के लिए, स्वस्थनिक नमी संरक्षण, खरपतवार नियंत्रण व कटाई हेत्तु क्रियाओं का मशीनीकरण करना

मेंहदी के लिए प्रौद्योगिकियों का विकास करना

बागवानी के लिए उत्पादन प्रौद्योगिकियों का विकास करना

महत्वपूर्ण अनुसंधान परियोजनाएं

निदेशालय में चली महत्वपूर्ण अनुसंधान परियोजनाएं इस प्रकार है ।

I. भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा प्रायोजित

1. एआईसीआरपी - तिल
2. एआईसीआरपी - अरंडी
3. एआईसीआरएन - पोटेंशियल क्रॉप्स
4. परियोजना समन्वय इकाई (बाजरा), एआईसीआरपी (बाजरा)

II. राज्य सरकार द्वारा प्रायोजित

1. गैर-योजनागत योजना : क्षेत्रीय, नारप, बाजरा और मोठ

III. तदर्थ परियोजनाएं

1. आरकेवीवाई

अ) राजस्थान में जलवायु परिवर्तन के परिदृश्य में तनाव कृषि के लिए प्रौद्योगिकियों का विकास

अरंडी RHC - 1

ईसबगोल RI - 1

बुवाई

स्प्रेकलर सिंचाई

करना

ब) शुष्क परिस्थितिकी तंत्र से जीरा व निर्यात बढ़ाना

स) राजस्थान में जैविक खेती के लिए तकनीक विकसित करना ।

प्रमुख अनुसन्धान उपलब्धियां

क्षेत्रीय अनुसंधान एवं विस्तार सलाहकार समिति (जेडआरईऐसी) आवश्यकता आधारित अनुसन्धान कार्यक्रमों की योजना बनाने और उत्पादन सिफारिशों को अंतिम रूप देने के लिए एक नोडल एजेंसी के रूप में कार्य करती है। जेडआइईऐसी द्वारा राज्य के कृषि जलवायु खंड 1ए, 2ए व 2बी के पैकेज ऑफ प्रौक्टिसेज हेतु सिफारिश की गयी निदेशालय की प्रमुख उपलब्धियां निम्नलिखित है।

1. ट्रेक्टर चलित सीडड्रील के प्रत्येक दांते के पीछे 4 किलो वजन का रबर का पहिया जोड़कर बुवाई करने से हल्की कणाकार मृदा में नमी संरक्षण व खरीफ फसलों में अंकुर स्थापन बढ़ता हैं।

2. पानी की 1.0 वीं पर अरण्डी की फसल में ड्रिप सिंचाई करने से अरण्डी के बीज उपज बढाने के साथ-साथ सिंचाई जल की भी 33 प्रतिशत तक बचत कर सकते हैं ।

3. इसबगोल में बुवाई के समय व बुवाई के 8, 20, 40, 55 व 70 दिनों पर फव्वारा विधि से सिंचाई करने पर, चैक बैसिन विधि की तुलना में पानी की बचत व बीज उपज में वृद्धि की जा सकती हैं ।

4. जीरे में बुवाई के समय बुवाई के 10, 20, 55 व 80 दिनों पर फव्वारा विधि से सिंचाई करने पर, चैक बैसिन विधि की तुलना में पानी की बचत व बीज उपज में वृद्धि की जा सकती हैं ।

5. एण्टोमोफेगस कवक बेवेरिया बासीयाना अथवा मेरारिजियम ऐनीसोजिलई का 10 ग्राम प्रति किलो बीज के हिसाब से बीजोपचार और 125 किलो प्रति हैक्टर को 125 किलो गोबर की खाद में मिलाकर बुवाई से पहले मृदा में अनुपयोग से गेंहू व मूंगफली में प्रभावी दीमक नियंत्रण सिद्ध हुआ हैं ।

6. इमिडाक्टोप्रिड 70 डब्ल्यू एस का 7.5 ग्राम प्रति किलो बीज के हिसाब से बीजोपचार व इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एस.एल. का 0.25 मिली. प्रति लीटर अथवा लेम्ब्डा साइलोथ्रिन का 1 मिली. प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करने से तिल में फाईलोडी रोग की रोकथाम सिद्ध हुई हैं ।

7. जीरा में ब्लाइट और चूर्ण फफूंदी का प्रबंधन करने के लिए पैराक्लोस्ट्रोबिन 13.3% + एपीओसीकोनोजोल 5% का 50 ग्राम सक्रीय तत्व प्रति हैक्टर (या वाणिज्यिक उत्पाद @1.5ग्राम/लीटर पानी) के हिसाब से पर्णिय छिड़काव प्रभावी पाया गया है।

8. गेंहू में बुवाई के 30-35 दिनों पर मेटसल्युरॉन मिथाइल का 4 ग्राम प्रति हैक्टर अथवा क्लोडिनोफोप प्रोपार्जील 15 प्रतिशत + मेटसल्युरॉन मिथाइल 1 प्रतिशत का 55 ग्राम प्रति हैक्टर के छिड़काव से प्रभावी खरपतवार नियंत्रण हुआ हैं ।

9. चने में पेण्डामेथालिन का 600 ग्राम प्रति हैक्टर के हिसाब से पूर्व उद्भव (च्तम.मउमतहमदबम) अनुप्रयोग से प्रभावी खरपतवार नियंत्रण हुआ हैं ।

10. जीरे में बुवाई के 18-20 दिनों पर ऑक्सीडायरजिल अथवा ऑक्सीफलोरफेन का 50 ग्राम प्रति हैक्टर के छिड़काव व 30-35 दिनों पर निराई-गुड़ाई से प्रभावी खरपतवार नियंत्रण हुआ हैं।

11. इसबगोल में पूर्व उद्भव (Pre-emergence) अथवा बुवाई के 18-20 दिनों पर आइसोप्रोटयुरॉन का 500 ग्राम प्रति हैक्टर के छिड़काव व 30-35 दिनों पर निराई-गुड़ाई से प्रभावी खरपतवार नियंत्रण हुआ हैं ।

12. राया में ऑक्सीडायरजिल का 90 ग्राम प्रति हैक्टर के हिसाब से पूर्व उद्भव (Pre-emergence) अनुप्रयोग व 30-35 दिनों पर निराई से प्रभावी खरपतवार नियंत्रण हुआ हैं ।

13. तिल में एलाक्लोर तरल का 1.5 किलो प्रति हैक्टर अथवा एलाक्लोर दाना का 2.0 किलो प्रति हैक्टर के हिसाब से बुवाई पूर्व अनुप्रयोग (pre-plant incorporation) व 30-35 दिनों उपरांत निराई से प्रभावी खरपतवार नियंत्रण हुआ हैं ।

14. अरण्डी में पेण्डामेथालिन का 1 किलो प्रति हैक्टर के हिसाब से पूर्व उद्भव (Pre-emergence) अनुप्रयोग से प्रभावी खरपतवार नियंत्रण हुआ हैं ।

15. अरण्डी की 120 से.मी. दूरी पर उगी दो पंक्तियों के बीच में एक पंक्ति मूंग अथवा मोठ की अर्न्तवर्तीय फसल के रूप में लगाना लाभकारी सिद्ध हुआ हैं ।

16. अरंडी में 120 x 90 सेंटीमीटर पौध अंतराल रखने व 20 किलोग्राम प्रति हेक्टर पोटाश देने से उपज में महत्वपूर्ण वृद्धि हुई है।

17. अरंडी में एक बटा तीन भाग नत्रजन बुवाई के समय व शेष दो बटा तीन भाग टपका सिंचाई द्वारा बुवाई के 30, 70, 90 व 110 दिनों पर देने से उपज में महत्वपूर्ण वृद्धि हुई है।

18. पपीता को 2.5 ग 1.6 मीटर पौध अंतराल पर रोपण से उपज में महत्वपूर्ण वृद्धि हुई है।

19. निम्नलिखित किस्मों को रबी 2014-15 के पैकेज ऑफ प्रैक्टिसेज में शामिल करने हेतु सिफारिश किया गया है।

अ) सरसों : पूसा सरसों 27, पूसा सरसों 26, एन आर सी. एच बी 101, आर जी एन 145

ब) गेहूं : राज मोल्या रोधक एक, एच डी 2967, केआरएल, 210, केआरएल 213, राज 4120, राज 4079, राज 6560

स) जौ : आरडी 2715

द) चना : जी एन जी 1488, आरएसजी896, जीएनजी 1958, आरएसजी 974

क) प्याज : आरओ 252, आरओ 59, अकोला सफेद, भीमा राज

अनुसंधान प्रयोगात्मक प्रक्षेत्र

बाजरा RHB - 177

मूंग SML - 668

ग्वार RGC - 1038

मिर्ची RCh-1

कृषि बीज

बीज निदेशालय, कृषि विश्वविद्यालय अधीनस्थ विभिन्न अनुसंधान केन्द्रों/संस्थानों, कृषि विज्ञान केन्द्र पर खरीफ, रबी व जायद में विभिन्न फसलों की उन्नत किस्मों के प्रजनक बीज व ट्रयूथफुली लेवल्ड बीज के उत्पादन से विद्यायन तक के कार्य की देख रेख करता हैं । साथ ही जहाँ आवश्यकता हो वहाँ पर विभिन्न फसलों की उन्नत किस्मों के आधार पर बीज व प्रमाणित बीज उत्पादन कार्य की देखरेख भी करताहैं । यहाँ उत्पादित उन्नत बीज (प्रजनक बीज) अन्य बीज उत्पादन संस्थानों जैसे राजस्थान राज्य बीज निगम, राष्ट्रीय बीज निगम तथा निजी बीज उत्पादन करने वाली कम्पनियों को आगे की श्रेणी में बीज पैदा करने हेतु उपलब्ध करवाता हैं तथा साथ ही साथ ट्रयूथफुल लेवल बीज अनुसंधान संस्थान व कृषि विज्ञान केन्द्रों के माध्यम से राज्य के किसानों को भी बीज उपलब्ध करवाने के कार्य करता हैं ।

प्रजनक बीज उत्पादनः वर्ष 2013-14 में रबी में विभिन्न फसलों की किस्में जैसे गेंहू, मैथी, चना का 360.44 क्विं तथा खरीफ 2014 में तिल व बाजरा का 7.6 क्विं. बीज उत्पादित किया गया ।

टी.एल. (ट्रयूथफुली लेवल्ड) बीज उत्पादनः- विश्वविद्यालय के विभिन्न केन्द्रों पर रबी 2013-14 में गेंहूँ, जीरा, मैथीव चना की विभिन्न किस्मों का 102.76 क्विं, जायद में संकर बाजरा, आर.एच.बी.177, 3.48 क्विं व खरीफ 2014 में तिल, मोठ, मूंग व ग्वार की विभिन्न किस्मों का 421.578 क्विं बीज पैदा किया गया।

तालिका 1. कृषि विश्वविद्यालय के विभिन्न केन्द्र पर रबी 2013-14 में बीज उत्पादन

क्र.सं.	केन्द्र का नाम	फसल	किस्म	बीज उत्पादन (क्विं) प्रजनक बीज	टी.एल. बीज
1.	कृषि अनुसंधान केन्द्र, मण्डोर	गेंहूँ	राज. 4083	201.00	—
		जीरा	जी.सी. 4	—	50.0
2.	कृषि अनुसंधान केन्द्र,जालोर	मैथी	आर.एम.टी. 305	10.77	3.15
		जीरा	जी.सी.4	—	5.50
		चना	आर.एस.जी. 895	—	44.11
3.	कृषि अनुसंधान उप–केन्द्र, सुमेरपुर	गेंहूँ	राज 3077	132.69	—
		चना	आर. एस.जी. 895	12.14	—
	कुल बीज			**360.44**	**102.76**

तालिका 2. टी. एल. बीज उत्पादन जायद 2014

क्र. सं.	केन्द्र का नाम	फसल	किस्म	बीज उत्पादन (क्विं)
1.	कृषि विश्वविद्यालय, केन्द्र मण्डोर	बाजरा	आरएक्सबी 177	3.48

तालिका 3. (अ) खरीफ 2014 में बीज उत्पादन - कृषि अनुसंधान केन्द्र, मण्डोर

क्र. सं.	फसल का नाम	किस्म	बीज उत्पादन (क्विं)	
			प्रजनक बीज	टी.एल.बीज
1.	तिल	आर.टी. 46	0.11	0.41
		आर.टी. 127	0.68	0.60
		आर.टी. 346	2.07	2.13
		आर.टी. 351	2.24	3.47
2.	मोठ	आर.एम.ओ.435	—	6.15
3.	मूंग	आई.पी.एम. 02—03	—	3.66
		जी.एम. 4	—	18.65
4.	ग्वार	आर.जी.सी.1003	—	3.09
		आर.जी.सी.1017	—	27.71
5.	बजरा	एम.बी.सी. 2	2.50	—
	कुल बीज		**7.60**	**65.87**

तालिका 3. (ब) खरीफ 2014 में बीज उत्पादन - कृषि अनुसंधान केन्द्र, उप केन्द्र - समदड़ी

क्र. सं.	फसल का नाम	किस्म	टी.एल. बीज उत्पादन (क्विं)		
			अनुसंधान हिस्सा 51:	उत्पादक हिस्सा 49:	कुल
1.	मूंग	जी.एम. 4	3.16	3.04	6.20
2.	मोठ	आर.एम.ओ. 435	6.27	6.03	12.30
3.	ग्वार	आर.जी.सी.1003	2.09	2.01	
	कुल बीज				**22.60**

तालिका 3. (स) खरीफ 2014 में बीज उत्पादन-कृषि अनुसंधान केन्द्र, केश्वाना, जालोर

क्र. सं.	फसल का नाम	किस्म	टी.एल. बीज उत्पादन (क्विं)		
			अनुसंधान हिस्सा 51:	उत्पादक हिस्सा 49:	कुल
1.	तिल	आर.टी. 351	4.80	—	4.80
2.	मूंग	जी.एम. 4	30.372	11.541	41.913
		जी.एम. 4	10.13	—	10.13
3.	मोठ	आर.एम.ओ. 435	7.50	—	7.50
4.	ग्वार	आर.जी.सी. 936	7.50	2.85	10.35
		आर.जी.सी. 1017	32.092	12.193	44.285
		आर.जी.सी. 1017	6.47	—	6.47
	कुल योग				**125.448**

तालिका 3. (द) खरीफ 2014 में बीज उत्पादन-कृषि अनुसंधान उप-केन्द्र, सुमेरपुर

क्र.सं.	फसल का नाम	किस्म	बीज उत्पादन (क्विं) (टी.एल.बीज)
1.	तिल	आर.टी. 346	3.10
		आर.टी.351	2.0
2.	मूंग	जी.एम.4	10.75
3.	ग्वार	आर.जी.सी. 936	19.17
		आर.जी.सी. 1002	8.01
	कुल बीज		**43.03**

तालिका 3. (य) खरीफ 2014 में बीज उत्पादन-कृषि अनुसंधान केन्द्र, जालोर

क्र.सं.	फसल का नाम	किस्म	बीज उत्पादन (क्विं) (टी.एल.बीज)
1.	मूंग	जी.एम. 4	34.29
		आर.एम.जी. 62	9.40
2.	ग्वार	आर.जी.सी. 1017	103.94
	कुल बीज		**147.63**

तालिका 3. (र) खरीफ 2014 में बीज उत्पादन-कृषि अनुसंधान उप-केन्द्र, नागौर

क्र.सं.	फसल का नाम	किस्म	बीज उत्पादन (क्विं) (टी.एल.बीज)
1.	ग्वार	आर.जी.सी. 936	1.80
		आर.जी.सी. 1003	15.20
	कुल बीज		**17.00**

3. कृषि प्रसार शिक्षा

परिचय

कृषि विश्वविद्यालय जोधपुर में प्रसार शिक्षा का कार्यप्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा वर्ष 2013 से किया जा रहा है। प्रसार शिक्षा का मुख्य ध्येय प्रशिक्षण, प्रदर्शन, कृषि सलाह व अन्य प्रसार माध्यमों से प्रभावी कृषि प्रौद्योगिकी का हस्तान्तरण कर मानव संसाधन विकास, ग्रामीण समुदाय की समृद्धि, कृषक एवं कृषक महिलाओं का आर्थिक व सामाजिक उत्थान, ग्रामीण युवाओं हेतु कृषि आधारित स्वरोजगार के अवसर उपलब्ध कराना है। यह कार्य कृषि विश्वविद्यालय जोधपुर के अधीन कार्यरत प्रसार शिक्षा निदेशालय के माध्यम से 06 कृषि विज्ञानकेन्द्रों के द्वारा संपादित किया जा रहा है।

प्रसार शिक्षा निदेशालय के मुख्य उद्देश्य निम्न हैं–

1. राज्य सरकार व गैर सरकारी संगठनों के कार्यकर्ताओं व विभिन्न अधिकारियों के लिये अनुसंधान द्वारा विकसित तकनीकी के पाठ्यक्रम तैयार कर प्रशिक्षण देना।
2. राज्य के कृषक, कृषक महिलाओं एवं विद्यालय छोड़ चुके युवा वर्ग के कृषक बालकों एवं बालिकाओं हेतु लघु एवं दीर्घ अवधि के रोजगारोन्मुख प्रषिक्षण आयोजित करना।
3. प्रथम पंक्ति प्रदर्शन व कृषकों के प्रक्षैत्रों पर व्यापक प्रसार के लिये परीक्षण आयोजित कर कृषि की नवीनतम प्रौद्योगिकी का मूल्यांकन एवं परिश्करण करना।
4. प्रौद्योगिकी के शीघ्र प्रसार हेतु कृषि साहित्य तैयार करना तथा विविध माध्यमों से कृषि सूचनाएं कृषकों तक पहुँचाना।
5. विश्वविद्यालय के प्रशासनिक नियंत्रण में कार्यरत कृषि विज्ञान केन्द्रों की विभिन्न गतिविधियों का सुचारू रूप से संचालन, परिवेक्षण व मूल्यांकन करना।

मिशन

प्रसार शिक्षा निदशालय कामिशन कृशकों की आय बढाना, आजीविका सुरक्षा, फसल विविधता जोखिम एवं कृषि की स्थिरता की गुणवत्ता में सुधार हेतु सामाजिक समानता एवं समावेश विकास करना।

प्रसार शिक्षा निदेशालय

- प्रशासनिक इकाई (लेखा, स्थापना, भण्डार एवं यातायात)
- तकनीकी इकाई (प्रशिक्षण, योजना, परिवेक्षण एवं मूल्यांकन)

संस्थागत ढांचा

कृषि विज्ञान केन्द्र

राज्य के 10 कृषि सस्य जलवायु खण्ड़ में से तीन कृषि सस्य जलवायु खण्ड़ विश्वविद्यालय के सेवा क्षेत्र में आते हैंजिनमें 6 कृषि विज्ञान केन्द्र कार्यरत है।

विभिन्न कृषि विज्ञान केन्द्रों की स्थिति

कृषि विज्ञान केन्द्र, अठियासन, नागौर (1982 में स्थापित)

कृषि विज्ञान केन्द्र, केशवाना, जालोर (1985 में स्थापित)

कृषि विज्ञान केन्द्र, सिरोही (1989 में स्थापित)

कृषि विज्ञान केन्द्र, गुड़ामालानी, बाड़मेर (2012 में स्थापित)

कृषि विज्ञान केन्द्र, मौलासर, नागौर (2012 में स्थापित)

कृषि विज्ञान केन्द्र, फलौदी, जोधपुर (2012 में कस्थापित)

संस्थागत प्रशिक्षण

कृषक प्रशिक्षण

कृषकों के लिये 92 अल्प अवधि (2-6 दिवसीय) संस्थागत प्रशिक्षण विभिन्न विषयों जैसे-फसल उत्पादन, उद्यानिकी, पशुपालन, मृदाविज्ञान, पौध संरक्षण एवं गृहविज्ञान आदि पर आयोजित किये गये। इनप्रशिक्षणों द्वारा 2772 कृशक एवं कृषक महिलाऐं एवं ग्रामीण युवाओं को लाभान्वित किया गया।

व्यवसायिक प्रशिक्षण

कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा व्यावसायिक कौशल आधारित 2 प्रशिक्षण कटाई, सिलाई एवं कसीदाकारी, प्रसंस्करण एवं पैकेजिंग आदि पर (3-80 दिवसीय) आयोजित किये गये। इन प्रशिक्षणों के प्रभाव से अधिकांश युवाओं ने स्वयं के रोजगार स्थापित किये तथा वे वर्तमान में प्रतिवर्ष 15000-25000 रूपये की अतिरिक्त आय अर्जित कर रहे है।

प्रसार कार्यकताओ का प्रशिक्षण

प्रसार से जुड़े अधिकारियों व कार्यकर्ताओं को कृषि की नवीनतम प्रौद्योगिकी से अवगत कराने के उद्देश्य से केन्द्रों द्वारा 20 संस्थागत प्रशिक्षण आयोजित किये गये । कृषक एवं कृशक महिलाओं के लिय 58 एक दिवसीय (असंस्थागत) प्रशिक्षण गांवों में आयोजित किये गये जिसमें कृषकों को कृषि की नई प्रौद्योगिकी से अवगत कराने के लिये प्रदर्शन भी दिये गये । असंस्थागत प्रशिक्षणों के दौरान कृषकों की कृषि संबंधित समस्या का समाधान भी किया गया।इन प्रशिक्षणों में 1256 कृषक एवं कृषक महिलाओं ने भाग लिया।

अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन

तिलहन प्रदर्शन 407 किसानों के वहां पर 182 हैक्टेयर क्षेत्र में चने, मूंग, मोठ बीन के प्रदर्शन लगाये गये ।खाद्यान्न फसलों के अन्तर्गत 165 प्रदर्शन 70 हेक्टर क्षेत्र में आयोजित किये गये। गेहूँ में किस्म राज-4037 के लगाये गये । इन प्रदर्शनों के अन्तर्गत अधिकतम (47-55 क्विं/है) प्राप्त की गई । किसानों में इस किस्म की ग्राह्यता अधिक थी क्योंकि यह आड़े नहीं गिरती है तथा उत्पादन अधिक देती हैं। इन प्रदर्शनों में 16-25 प्रतिशत 19.1 उपज स्थानीय किस्मों की तुलना में अधिक पायी गयी । औषधीय एवं नगदी फसलों के उपर 168 हैक्टेयर क्षेत्र में अंग्रिम पंक्ति प्रदर्शन लगाये गये ताकि इन फसलों पर उपलब्ध कृषि तकनीक को किसानों तक पहुचायां जायें ।

प्रक्षेत्र परीक्षण

कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा कृषकों की अति महत्वपूर्ण समस्या एवं उसके समाधान के लिए प्रक्षेत्र परीक्षण आयोजित किये जाते हैं । इन परीक्षणों में केन्द्रों द्वारा सुझाई गई तकनीक में क्षेत्र विशेष के अनुरूप सूक्ष्म संशोधन किया जाता है। गत वर्ष कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा 20 प्रक्षेत्र परीक्षण आयोजित किये गये जिसमें फसलोत्पादन 11 पशुपालन 4 उद्यानिकी 5 पौध संरक्षण 3 से संबंधित थे।

प्रकाशन

पन्द्रह तकनीकी मार्गदर्शिका व तीस फोल्डर्स भी कृषकों को लाभान्वित कराने के उद्देश्य से प्रकाशित किये गये।

कृषि विज्ञान मेला

निदेशालय द्वारा 23 फरवरी 2014 को मण्डोर कृषि अनुसंधान फार्म पर आत्मा के सहयोग से एक किसान मेला आयोजित किया गया, जिसमें माननीय कुलाधिपति एवं राज्यपाल राजस्थान सरकार श्रीमती माग्रेट

अल्वा को मुख्य अतिथि के तौर पर आमंत्रित किया गया । इस कृषि मेले में सभी विभागों की प्रदर्शनीयां लगाई गई तथा कृषक वैज्ञानिक संवाद का आयोजन किया गया । मेले में करीब 1500 किसानों ने भाग लिया।

4. कृषि शिक्षा

(अ) कृषि महाविद्यालय, मण्डोर, जोधपुर

विभाग का संगठनात्मक ढाँचा:- कृषि महाविद्यालय, मण्डोर जोधपुर की स्थापना जुलाई, 2012 में हुई थी। कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर की स्थापना (14 सितम्बर,2013) से पूर्व यह महाविद्यालय स्वामी केश्वानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के अन्तर्गत कार्यरत् था ंवर्तमान में इस महाविद्यालय में कृषि विज्ञान (ऑनर्स) स्नातक डिग्री कार्यक्रम चल रहा हैं । यह महाविद्यालय राजस्थान के शुष्क पश्चिमी मैदान खण्ड 1-ए के जोधपुर जिले में स्थित हैं ।

महाविद्यालय के उद्देश्य:-

1. कृषि से सम्बन्धित विभिन्न विषयों का संपूर्ण ज्ञान प्रदान करना
2. शिक्षा के साथ-साथ विद्यार्थियों के संपूर्ण विकास के लिए अनेक कार्यक्रमों का आयोजन

स्वीकृत कार्य एवं रिक्त पदों का विवरण:-

1. महाविद्यालय का प्रमुख कार्य कृषि से सम्बन्धित सैधांतिक एवं प्रायोगिक शिक्षा प्रदान करना, जो कि सफलतापूर्वक चल रहा हैं ।
2. इस महाविद्यालय में स्वीकृत शैक्षणिक तथा गैर शैक्षणिक पदों का विवरण इस प्रकार हैं:-

अ. शैक्षणिक पदों का विवरण :-

क्र. सं.	पद का नाम	स्वीकृत पदों की संख्या	भरे हुए पदों की संख्या	रिक्त पदों की संख्या
1.	सहायक आचार्य	10	04	06
2.	सह–आचार्य	02	–	02
3.	आचार्य	01	–	

ब. गैर-शैक्षणिक पदों का विवरण :-

क्र. सं.	पद का नाम	स्वीकृत पदों की संख्या	भरे हुए पदों की संख्या	रिक्त पदों की संख्या
1.	प्रयोगषाला सहायक	04	01	03
2.	निजी सहायक	01	01	–
3.	कनिष्ठ लिपिक	01	01	–
4.	फार्म मैनेजर	01	–	01
5.	पम्प ऑपेरटर	01	0	01
6.	पुस्तकालय सहायक	01	–	01
7.	कृषि पर्यवेक्षक	01	01	–
8.	वाहन चालक	02	02	–

विभाग के प्रमुख्य कार्य तथा प्रत्येक कार्य के विरूद्ध वर्ष 2014–15 की प्रगतिः–

महाविद्यालय का प्रमुख कार्य कृषि में शिक्षा प्रदान करने के साथ साथ विद्यार्थियों का सम्पूर्ण विकास करना हैं । विद्यार्थियों की नियमित कक्षाऐं हो रही हैं । समय पर सम्बन्धित विषय के सैधांतिक एवं प्रायोगिक कालांश संबंधित शिक्षक द्वारा लिए जा रहे हैं । प्रथम छः माह की सैधांतिक एवं प्रायोगिक परिक्षाऐं समय पर सफलता पूर्वक सम्पन्न हो चुकी हैं । जनवरी, 2015 से द्वितीय छ'माह की कक्षाऐं नियमित रूप से चल रही हैं । अर्न्तराष्ट्रीय विकिरण विज्ञान केन्द्र, मण्डोर, जोधपुर में विद्यार्थियों का भ्रमण कराया, जहाँ पर उन्हें रिमोट सेन्सिंग से संबंधित एवं इसका उपयोग कृषि में किस प्रकार से करते हैं, समझाया गया । इसी शैक्षणिक सत्र के दौरान विद्यार्थियों को प्रगतिशील किसानों के यहाँ प्रक्षेत्र भ्रमण कराया, जहाँ पर जैविक खेती, सूक्ष्म सिंचाई विधि तथा कीट एवं रोगों का खेती में प्रबंधन से सम्बन्धित

जानकारी प्रायोगिक रूप से प्रदान की गई । राष्ट्रीय स्तर पर श्री रामचन्द्र मिशन द्वारा आयोजित निबन्ध लेखन प्रतियोगिता में विद्यार्थियों ने भाग लिया एवं क्षेत्र स्तर पर प्रथम स्थान भी प्राप्त किया । खेल प्रशिक्षक लक्ष्मण सिंह राठौड़ द्वारा भरा हुआ पद ।

1. अगस्त माह में सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन महाविद्यालय स्तर पर किया गया जिसमें अंग्रेजी, हिन्दी वाद-विवाद प्रतियोगिता, व्यंगचित्र, रंगोली , एकल एवं सामूहिक नृत्य आदि कार्यक्रम शामिल थे ।
2. कक्षा प्रतिनिधि चयन का चुनाव भी अगस्त माह में सफलतापूर्वक संपन्न हुआ ।
3. अन्तर महाविद्यालय स्तरीय खेल-कूद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें कृषि महाविद्यालय मण्डोर के छात्रों ने क्रिकेट एवं बैडमिंटन में जीत हासिल की ।
4. कृषि महाविद्यालय मण्डोर में दिनांक 8 मार्च से 22 मार्च 2014 तक वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसके तहत् टेबल टेनिस, बैडमिंटन, क्रिकेट एवं दौड़ चौपासनी संस्थान, जोधपुर के स्टेण्डियम पर आयोजित की गई ।

वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिताएँ

प्रेरणादायक व्याख्यानः- विधार्थियों के जीवन में प्रेरणा जागृत करने के लिए समय-समय पर अनेक विषयों पर प्रेरणादायी व्याख्यान का आयोजन किया गया ।

1. ठोस एवं तरल अपशिष्ट पदार्थो के प्रबंधन पर व्याख्यान श्री सी.श्रीनिवासन, भारतीय दरियाली सेवा परियोजना के निर्देशक द्वारा प्रस्तुत किया गया ।
2. किस प्रकार अपने प्रक्षेत्र पर जल संग्रहरण का प्रबंधन किया जा सकता हैं ! इस शीषर्क पर केडया वर्षा जल संग्रहरण के प्रबंधन निर्देशक श्री विजय केडिया द्वारा एक व्याख्यान के माध्यम से बच्चों को जल संग्रहरण की जानकारी दी गई ।

3. सभी विद्यार्थियों ने मिलकर 5 सितम्बर को शिक्षक दिवस का आयोजन किया

4. बैंको के प्रबंधन, शीर्षक पर श्रीमती संतोष, वरिष्ठ प्रबंधक, महाराष्ट्र बैंक द्वारा व्याख्यान प्रस्तुत किया ।

5. श्री अरूण कुमार पुरोहित, मुख्य कार्यकारी अधिकारी द्वारा ग्रामीण विकास पर व्याख्यान प्रस्तुत किया ।

विषय विशेषज्ञ व्याख्यान

आलौच्य वर्ष की विशेष पहल एवं उपलब्धि:-

1. श्रीराम चन्द्र मिशन द्वारा आयोजित निबन्ध लेखन प्रतियोगिता में कृषि स्नातक द्वितीय वर्ष के छात्र, अंकित टाक ने क्षेत्र स्तर पर प्रथम स्थान प्राप्त किया ।

2. इस महाविद्यालय के छात्रों ने क्रिकेट एवं बैडमिंटन अन्तर-महाविद्यालय प्रतियोगिता में जीत हासिल कर विजय चिन्ह्अपने नाम किया ।

3. महाविद्यालय के सांस्कृतिक कार्यक्रम में भी विद्यार्थियों की भागीदारी सराहनीय रही ।

4. समग्र विकास कल्याण समिति द्वारा दिये जाने वाले युवा वैज्ञानिक पुरस्कार 2014 के लिए डॉ0 उमा नाथ शुक्ला सहायक प्राध्यापक शस्य विज्ञान का चयन किया गया ।

5. कृषि महाविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा प्रकाशित पुस्तक,पत्र,लोकप्रिय लेख इत्यादि का वर्णन इस प्रकार हैः-

प्रकाश्ति	राष्ट्रीय जर्नल	अर्न्तराष्ट्रीय जर्नल
पुस्तक अध्याय	4	-
पत्र	6	2
लोकप्रिय लेख	11	-

6 . परिसंवाद,सम्मेलन एवं प्रशिक्षण विवरणः

राष्ट्रीय परिसंवाद	8
राष्ट्रीय सम्मेलन	3
प्रशिक्षण	6

सार संक्षेप

कृषि महाविद्यालय, मण्डोर जोधपुर की सभी गतिविधियाँ जैसेः-विषय कालांश, सांस्कृतकि कार्यक्रम, खेल-कूद प्रतियोगिता, प्रेरणादायी व्याख्यान इत्यादि का आयोजन समय-समय पर किया जा रहा हैं । इस महाविद्यालय के सभी वैज्ञानिकों एवं गैर-शैक्षणिक कर्मचारियों का सहयोग शिक्षा में, कृषि अनुसंधान एवं प्रबंधन कार्यो में योगदान सराहनीय हैं । उत्तम शिक्षा के लिए आवश्यक प्रशिक्षण सभी वैज्ञानिक समय समय पर ले रहे हैं ।

(ब) कृषि महाविद्यालय, सुमेरपुर (पाली)

संस्था/महाविद्यालय का संगठनात्मक ढांचाः

कृषि महाविद्यालय, सुमेरपुर पूर्व में स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर की ही एक शैक्षणिक संस्था थी । वर्ष 2013 में अधिनियम 21 के तहत 14 सितम्बर, 2013 को राज्य के पश्चिमी क्षेत्र के 6 जिलों के शुष्क एवं उष्ण अंश को विकसित करने एवं कृषि शिक्षा प्रसार की आवश्यकतानुसार नया कृषि विश्वविद्यालय जोधपुर में स्थापित किया गया । तदुपरान्त यह महाविद्यालय, जोधपुर कृषि विश्वविद्यालय के अधीन संचालित हो रहा है । महाविद्यालय लूणी नदी के संग्रहण क्षेत्र के परिवर्तनशील मैदान खण्ड-2-1 (जालोर, पाली एवं सिरोही जिले) में हैं । इस महाविद्यालय का विधिवत उद्घाटन तत्कालीन माननीय कुलपति स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर डा. ए. के. द्हामा द्वारा किया गया ।

कृषि महाविद्यालय, सुमेरपुर की स्थापना उपरांत शैक्षणिक कार्य विधिवत जारी हैं एवं वर्तमान में चार वर्षीय पाठ्यक्रम का तृतीय वर्ष चल रहा हैं । कृषि महाविद्यालय हेतु नवनिर्मित भवन का शिलान्यास माननीय तत्कालीन वन व पर्यावरण राज्य मंत्री श्रीमती बीना काक द्वारा 9.9.2013 को किया गया ।

स्वीकृत कार्य एवं रिक्त पदों का विवरण :

नॉन प्लॉन द्वारा संचालित शैक्षणिक परियोजना अर्थात महाविद्यालय जो कृषि महाविद्यालय, जोधपुर के अंतर्गत चल रहे हैं, के पदों का विवरण इस प्रकार हैं :-

अ. शैक्षणिक पदों का विवरण

	पद का नाम	नॉन प्लान	कुल		
			स्वीकृत पदों की संख्या	भरे हुए पदों की संख्या	रिक्त पदों की संख्या
1.	आचार्य	1	1	1	-
2.	सह–आचार्य	2	2	-	2
3.	सहायक आचार्य	10	10	4	6
	कुल	**13**	**13**	**5**	**8**

ब. अशैक्षणिक पदों का विवरण

क्र. मा.	पद का नाम	कुल		
		स्वीकृत पदों की संख्या	भरे हुऐ पद	रिक्त पद
1	नॉन प्लान	10	7	3

विभागीय प्रमुख कार्य तथा प्रत्येक प्रमुख कार्य के विरूद्ध आलौच्य वर्ा में प्रगति एवं उसकी विगत तीन वर्श से तुलना :

राज्य के पश्चिमी क्षेत्र (जोधपुर, बाड़मेर) के शुष्क एवं उष्ण अंश में कृषि शिक्षा को विकसित करने नया कृषि महाविद्यालय 4.8.2012 को सुमेरपुर में स्थापित किया गया । जिसकी महत्वपूर्ण उपलब्धियां निम्न प्रकार से हैं :-

1. कृषि महाविद्यालय, सुमेरपुर पाली के नवस्थापन एवं भवनों के शिलान्यास के साथ ही भवन निर्माण कार्य शुरू किया गया, जो प्रगति पर हैं ।

2. वर्ष 2014-15 में महाविद्यालय सुमेरपुर के बी.एस.सी. (कृषि) स्नातक डिग्री हेतु क्रमश : 44 छात्रों का

प्रवेश एवं अध्यापन एवं परीक्षा कार्यक्रम का संचालन । वर्तमान में महाविद्यालय में 117 छात्र-छात्रा अध्ययनरत् हैं ।

3. कृषि छात्रों के कृषि ज्ञान के साथ संर्वागीण व्यावहारिक ज्ञान की दृष्टि से कृषि के प्रायोगिक ज्ञान हेतु उन्नतशील कृषकों के यहां भ्रमण के अतिरिक्त उनके व्यक्तित्व एवं व्यक्तिगत विकास हेतु विभिन्न विषय विशेषज्ञों के व्याख्यान आयोजित करवाये जाते हैं ।

आलौच्य वर्ष की विशेष पहल एवं उपलब्धि :

1. महाविद्यालय की द्वितीय वर्ष की छात्रा सुश्री स्मिता विश्वविद्यालय स्तर पर मेरिट में स्थान प्राप्त कर चुकी है ।

2. महाविद्यालय में अधिष्ठाता के पद पर डॉ. भारत सिंह भीमावत ने 30 अगस्त 2014 को कार्यभार संभाला।

3. महाविद्यालय मे यूनाइटेड नेशन सेंटर फॉर इंडिया एण्ड भूँटान (यूनिक) एवं श्री रामचंद्र मिशन, चैन्नई के सौजन्य से मानवीय मूल्यों पर आधारित अंतर्राष्ट्रीय निंबध प्रतियोगिता में छात्र-छात्राओं ने उल्लेखनीय भागीदारी हेतु प्रशस्ति पत्र हासिल किया।

4. महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं ने डॉ. आर.के. राठौड़ के निर्देशन में ब्लॉक स्तरीय स्वंतत्रता दिवस एवं गणतंत्र दिवस कार्यक्रमों में उत्कृष्ट एवं उल्लेखनीय भागीदारी की एवं सम्मान प्राप्त किया।

5. महाविद्यालय की Website जारी की गई ।

6. महाविद्यालय केम्पस में स्वच्छता अभियान चलाया गया।

7. कृषि महाविद्यालय को 20 हेक्टेयर भूमी आंवटन हेतु प्रस्ताव स्थानीय प्रशासन, राजस्थान सरकार को भेजा गया, जो विचाराधीन हैं

8. अनुसंधान उप केन्द्र की पुरानी ईमारत को महाविद्यालय में छात्रा-छात्रावास के रूप में विकसित किया गया । वर्तमान में 29 छात्राऐं आवासीय सुविधा का लाभ ले रही हैं।

9. कृषि अनुसंधान केन्द्र, सुमेरपुर द्वारा लगभग 641 क्विं जैविक सब्जियां जिसके तहत् टमाटर, मिर्ची, भिण्डी, गौभी, प्याज, ग्वारफली, बैंगन एवं टिण्डे का उत्पादन किया गया । जिससे इस केन्द्र को लगभग 4 लाख 30 हजार का राजस्व प्राप्त हुआ ।

जैविक सब्जियां उत्पादन प्रक्षेत्र

सह-शैक्षिक एवं छात्र कल्याण गतिविधियों का संचालन :

1. महाविद्यालय के छात्र कल्याण प्रकोष्ठ के माध्यम से छात्र-छात्राओं के सर्वांगीण विकास हेतु अनेक कार्यक्रम समय-समय पर आयोजित किये जाते हैं। इसके अंर्तगत छात्रवृत्ति कार्यक्रम के अंतर्गत प्रत्येक छात्र-छात्रा को विभिन्न सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थाओं के माध्यम से आर्थिक संबल दिलवाने का प्रयास किया जा रहा है।

2. छात्र-छात्राओं में नेतृत्व क्षमता के विकास के लिये कक्षा प्रतिनिधियों एवं विश्वविद्याालय प्रतिनिधियों के चुनाव करवाये जाते है।

3. महाविद्यालय में नये एवं पुराने छात्र-छात्राओं को किसी तरह की प्रताड़ना एवं सीनियर छात्र-छात्राओं के द्वारा रेगिंग इत्यादि के निवारण के लिए सहायक अधिष्ठाता-छात्र कल्याण के नेतृत्व में एंटी-रेंगिग प्रकोष्ठ की स्थापना की गई है।

4. महाविद्यालय में विभिन्न उत्सवों को छात्र-छात्राओं में मूल्यों की स्थापना करने के उद्देश्य से प्रतिवर्ष आयोजित किया जा रहा हैं जिनमें शिक्षक दिवस, गाँधीजी-शास्त्रीजी जयंती, सुभाष जयंती, गणतंत्र दिवस, स्वाधीनता दिवस, राष्ट्रीय युवा दिवस, फ्रेशर्स वीक, स्वच्छता अभियान, मतदाता जागरूकता हेतु स्वीप कार्यक्रम के अंर्तगत साप्ताहिक अभियान, अंग्रेजी में निपूणता हासिल करने के लिये वाद-विवाद व निबंध प्रतियोगिता, राष्ट्रभाषा के प्रोत्साहन हेतु हिन्दी पखवाडा इत्यादि का छात्र-छात्राओं की संपूर्ण सक्रियता के साथ वर्कशॉप शैली में आयोजन किया गया।

कृषि महाविद्यालय, सुमेरपुर में आयोजित अन्तर कॉलेज वॉलीबाल एवं बैडमिन्टन प्रतियोगिता

(स) कृषि डिप्लोमा संस्थान लांडनु (नागौर)

राजस्थान सरकार की बटज घोषणा 2013-14 के तहत् सैक्ण्डरी स्कूल के बाद कृषि में व्यवसायिक प्रशिक्षण हेत्तु कृषि डिप्लोमा की शुरूआत राजस्थान में पहली बार कृषि डिप्लोमा संस्थान लांडनु के रूप में की गई ।

इस केन्द्र द्वारा तीन साल (छः सेमेस्टर) का कृषि में व्यवसायिक प्रशिक्षण कुल 25 विद्यार्थियों को दिया जा रहा हैं । इसमें प्रवेश हेत्तु न्यून्तम योग्यता दसवीं पास के साथ 14 से 25 वर्ष आयु होनी चाहिए, प्रवेश दसवीं के अंकों की वरियता के आधार पर दिया जाता हैं ।

राजस्थान सरकार के आदेश क्रमांकः प. (1)कृषि-3/2013/जयपुर, दिनांक 22 मई 2013 के तहत् इस संस्थान को ग्यारह (11) पद स्वीकृत किये गये हैं । जिसमें एक पद प्रिंसीपल, चार प्रशिक्षण अधिकारी, एक प्रयोगशाला सहायक, एक कृषि पर्यवेक्षक, एक वरिष्ठ लिपिक, एक कनिष्ठ लिपिक तथा दो चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी पद शामिल हैं । इस केन्द्र को जमीन आवंटन प्रक्रियाधीन हैं । इस समय इस केन्द्र पर डा0 सेवाराम कुमावत की प्रतिनियुक्ति प्रिन्सीपल पद पर की गई हैं तथा ग्यारह पदो ंके विरूद्ध दो चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी कार्यरत हैं ।

वर्ष 2013 -14 में 25 विद्यार्थियों को तीन वर्षीय डिप्लोमा में प्रवेश दिया गा था, जिसमें से अब 21 विद्यार्थी अध्ययनरत् हैं । राज्य सरकार की (जीरो सैशन) सलाह के अनुसवार वर्ष 2014-15 में किसी भी विद्यार्थीयों को प्रवेश नहीं दिया गया क्योंकि इस समय इस केन्द्र पर स्थाई कर्मचारी/अधिकारी की भर्ती नहीं हो पाई हैं । विद्यार्थीयों की पढ़ाई हेत्तु प्राध्यापकों की व्यवस्था विश्वविद्यालय की दूसरी शाखाओं जैसे कृषि महाविद्यालय जोधपुर व सुमेरपुर, कृषि विज्ञान केन्द्र, नागौर, कृषि अनुसंधान केन्द्र मण्डोर से की जा रही हैं । अभी तक प्रथम वर्ष के दो सेमेस्टर की पढ़ाई हो चुकी हैं । इस केन्द्र पर आवश्यक फर्नीचर की खरीद मार्च 2014 में की जा चुकी हैं ।

5. सार संक्षेप

कृषि विश्वविद्यालय जोधपुर पूर्व में स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर का ही एक खण्ड था। वर्ष 2013 में अधिनियम 21 के तहत 14 सितम्बर 2013 को राज्य के पश्चिमी क्षेत्र के 6 जिलों के शुष्क एवं उष्ण अंश को विकसित करने एवं कृषि शिक्षा प्रसार की आवश्यकतानुसार नया कृषि विश्वविद्यालय जोधपुर में स्थापित किया गया। इस नवीन कृषि विश्वविद्यालय के अन्तर्गत पश्चिमी राजस्थान के 6 जिलों के कृषि जलवायु खण्ड आते हैं जो इस प्रकार है। शुष्क पश्चिमी मैदान खण्ड **I-a** (जोधपुर, बाड़मेर जिले), लूणी नदी के संग्रहण क्षेत्र के परिवर्तनशील मैदान खण्ड **II-b** (जालौर, पाली एवं सिरोही जिले) तथ भीतरी जल निकास के परिवर्तनशील मैदान खण्ड **II-A** (नागौर जिला) इस विश्वविद्यालय के अन्तर्गत राजस्थान के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 342 लाख हैक्ट. में से 97 लाख हैं (28 प्रतिशत) आता है। खरीफ एवं रबी फसलों में राजस्थान के कुल कृषित क्षेत्रफल का कमशः 34.94 प्रतिशत एवं 14.64 प्रतिशत इसके अन्तर्गत आता है।

विश्वविद्यालय की प्रबंध बोर्ड में राज्य सरकार द्वारा विभिन्न श्रेणी के सदस्यों का नामित किया गया। इसी तरह कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति द्वारा 3 प्रबंध कार्यकारिणी सदस्य (अधिष्ठाता वर्ग, निदेशक वर्ग एवं प्रोफेसर) नामित किये गये

विश्वविद्यालय की स्थापना के साथ ही विभिन्न प्रशासनिक पदों का कार्यभार विश्वविद्यालय के अधिकारियों को सौंपा गया, कृषि विश्वविद्यालय में अकादमिक परिषद् गठन एवं विश्वविद्यालय के विभागाध्यशों की नियुक्ति की गयी। विश्वविद्यालय के विभिन्न पदों की भर्ती हेत्तु सलेक्शन बोर्ड में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् एवं राज्य सरकार द्वारा विशेषज्ञ नामित्त किये गये ।

कृषि विश्वविद्यालय की प्रथम अकादमिक परिषद् की प्रथम बैठक दिनांक 06.08.2014 को संपन्न हुई । जिसकी अध्यक्षता कृषि विश्वविद्यालय के निवर्तमान कुलपति डा0 एल.एन. हर्ष ने की । इस बैठक में कृषि विश्वविद्यालय में कृषि व्यवसाय में निपूर्णता हासिल करने हेतु भविष्य में कृषि व्यवसाय प्रबंधन संस्थान खोलने हेतु प्रस्ताव पारित किया गया । इसके अतिरिक्त लघु व्यवसायिक कार्यक्रमों के प्रशिक्षण जैसे उद्यान नर्सरी, भूमि स्वास्थ्य सुधार, फलों एवं सब्जियों के परिरक्षण का प्रस्ताव पारित किया गया तथा विश्वविद्यालय में कृषि तकनीकी ज्ञान जैसे उन्नत किस्मों के बीज कीट एवं रोग निदान हेतु एकल खिड़की योजना शुरू की जायेगी । छात्रों के सर्वांगीण उत्थान हेतु परामर्श केन्द्रों की स्थापना की जायेगी।

कृषि महाविद्यालय सुमेरपुर (पाली) एवं कृषि महाविद्यालय मण्डोर (जोधपुर) के नवस्थापन एवं भवनों का शिलान्यास के साथ ही भवन निर्माण कार्य शुरू किया गया जो प्रगति पर है। कृषि महाविद्यालय, मण्डोर के भवन की आधारशिला महामहिम राज्यपाल श्रीमती माग्ररेट अल्वा द्वारा दिनांक 23 फरवरी

2014 को रखी गई।

वर्ष 2014-15 में दोनों महाविद्यालयों मण्डोर एवं सुमेरपुर के बी.एस.सी. (कृषि) स्नातक डिग्री हेतु कमशः 45, 44 छात्रों का प्रवेश, अध्यापन एवं परीक्षा कार्यकम का संचालन हुआ । वर्तमान में दोनों कृषि महाविद्यालयों में 241 छात्र-छात्रा अध्ययनरत् हैं

कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर द्वारा 23 फरवरी, 2014 को आत्मा के सहयोग से कृषि अनुसंधान केन्द्र, मंडोर पर राजस्थान की पूर्व राज्यपाल महमहिम श्रीमति माग्रेट अल्वा के मुख्य अतिथ्य में एक विशाल किसान मेलें का आयोजन किया गया, जिसमें करीब 1500 कृषकों ने भाग लिया ।

कृषि विश्वविद्यालय 'एट ए ग्लांस' का विमोचन महामहीम राज्यपाल राजस्थान द्वारा दिनांक 18 नवम्बर 2013 को किया । विश्वविद्यालय ने अपनी एक वर्ष की गतिविधियों एवं महत्त्वपूर्ण उपलब्धियों को समावेशित करते हुए द्वि-वार्षिक 'न्यूज लेटर' (एग्री न्यूज) के दो अंक (प्रथम अंक में माह अक्टूबर 2013 से मार्च 2014 एवं द्वितीय अंक में माह अप्रेल से सितम्बर 2014 की उपलब्धियां) प्रकाशित किये हैं । प्रथम अंक को दिनांक 20 मई 2014 को डा0 ए.एस. फडौदा, पूर्व कुलपति महाराणा प्रताप कृषि विश्वविद्यालय, उदयपुर एवं निर्वतमान कुलपति कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर डा0 एल.एन. हर्ष ने एवं द्वितीय अंक को निर्वतमान कुलपति डा0 हेमन्त कुमार गेरा, आई.ए.एस. ने माह जनवरी 2015 में विमोचित किया ।

कृषि विश्वविद्यालय जोधपुर में दिनांक 20 से 21 मई, 2014 को दो दिवसीय तिल व रामतिल पर अखिल भारतीय वार्षिक कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता डा0 ए.एस. फडौदा, पूर्व कुलपति महाराणा प्रताप कृषि एवं तकनीकी विश्वविद्यालय, उदयपुर द्वारा की गई । इस दो दिवसीय कार्यशाला में राजस्थान में ईसबगोल अनुसंधान एवं उन्नत खेती का विमोचन किया गया ।

सरकार के सुराज संकल्प यात्रा 2013 की घोषणाओं के तहत् बारानी खेती से अधिक आय प्राप्त करने की तकनीक का कृषक प्रशिक्षण, कृषि गोष्ठी एवं कृषि प्रदर्शन विश्वविद्यालय के 6 कृषि विज्ञान केन्द्रों एवं 2 कृषि अनुसंधान केन्द्रों पर प्रत्येक माह आयोजित की जाती हैं । जिसमें अब तक छः हजार से अधिक कृषकों को लाभान्वित किया ।

कृषि विश्वविद्यालय की विभिन्न इकाईयों में फाईलिंग सिस्टम को एकरूप करने के लिए विश्वविद्यालय के सभी निदेशकों, अधिष्ठाताओं, कुलसचिव कार्यालय, वित्त नियंत्रक एवं परीक्षा नियंत्रक कार्यालय को पत्रावली की व्यवस्था, टिप्पणी लेखन प्रस्तुतीकरण एवं स्थाई फाईल सं. आवंटित की गई ।

कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा राष्ट्रीय एवं अर्न्तराष्ट्रीय स्तर के 25 अनुसंधान पत्र प्रकाशित किये गये एवं कृषि विश्वविद्यालय के विभिन्न वैज्ञानिकों द्वारा 30 राष्ट्रीय एवं अर्न्तराष्ट्रीय स्तर की सेमिनार, वर्कशॉप एवं कॉन्फ्रेंस में भाग लिया ।

मोठ RMO - 257

तिल प्रक्षेत्र

अमरेन्थस

प्रक्षेत्र निरीक्षण

कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर द्वारा विकसित हाइड्रोपोनिक पद्धति

कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर

E-mail : vcunivag@gmail.com